□□□□ □□□□□□□□□□

जनसत्ता 29 जून, 2014 : भारत के समाजवादी आंदोलन को □ कनई समझ से देखने, उसकी वरिासत, वचिारधारा और वमिर्श को समझने की दृष्टि हाशि□ पर प□ी दुनयि पुस्तक देती है□ इसमें बालकृष्ण गुप्त की यादों, वचिारों और योगदान के माध्यम से समाजवादी चतिनक्रम को समझने का प्रयास कयि गया है□ रवि राय ने अपनी भूमकि में बालकृष्ण गुप्त पर भावपूर्ण, पर महत्त्वपूर्ण टप्पिणी की है□ रवि राय भारतीय समाजवादी आंदोलन और वचिार के प्रमुख स्तंभ रहे है□

यह पुस्तक संस्मरण और बालकृष्ण गुप्त के लेखन पर आधारति है, जसिे इसके संपादकों- सारंग उपाध्याय और अनुराग चतुर्वेदी- ने पांच खंडों में बांटा है: 'संस्मरण', 'हाशि□ पर प□ी दुनयि', 'बुद्धजिीवी, नेहरू, लोहयि और वामपंथ', 'बि□ला, गोयनक और अंधी योजना□' और 'दस्तावेज'□

पुस्तक के पहले खंड- 'संस्मरण' में सात संस्मरण है, जो बालकृष्ण गुप्त के परविार के सदस्यों के है□ इनमें सबसे रोचक और दृष्टि-संपन्न अनुभव वद्यिासागर गुप्त के है 'भाई साहब और डॉक्टर साहब'□

राममनोहर लोहयि और बालकृष्ण गुप्त के संबंधों की शुरुआत 1926 में हुई□ इन दोनों का यूरोप प्रवास आसपास का है□ लोहयि 1929 में जर्मनी ग□ थे और बालकृष्ण 1931 में लंदन□ दोनों ने जनिेवा सम्मेलन, 1933 में साथ ख□ होकर नारे लगा□ और भारत में हो रहे ब्रटिशि अत्याचारों पर परचे बांटे□

दूसरा खंड अंतरराष्ट्रीय बदलावों पर है□ द्वतिीय वशि्वयुद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भारी बदलाव हु□, जनिमें यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों का अंत, अमेरकि-रूस के बीच शीतयुद्ध और □शिया, अफ्रीका और लातनि अमेरकि देश में स्वतंत्रता प्रमुख है□ इस न□ बदलाव को बालकृष्ण 'हाशि□ पर प□ी दुनयि की दो-तहिाई रंगीन आबादी' आलेख में स्पष्ट करते है□ इनके खलिाफ षड्यंत्र की बात को वे उठाते है और इनके संघर्ष और स्वरूप भी स्पष्ट करते है□ बालकृष्ण न□ साम्राज्यवाद को परभिाषति करते हु□ लखिते है: 'अमेरकि और रूस में औद्योगकि प्रतष्ठिान अधकिधकि□ कजैसे ही होते जा रहे है□ ब□ी-ब□ी अमेरकि कंपनयिों और रूस के ब□े-ब□े सरकारी संस्थानों का ढांचा □ कजैसा होता जा रहा है... दोनों शुद्ध फायदे और लाभ की बात सोचते है... अमेरकि में लोभी पूंजीवाद सेठ और रूस में रू□िक्रट्टरवादी कम्युनस्टिों की जगह व्यावहारकि प्रबंधक लेने लगे है□' इस लेख में उनकी चति□ उस समय की तीसरी दुनयि के वचिारकों जैसी है, जो बदलावों की व्याख्या कर रहे थे□

बालकृष्ण इस पुस्तक में पुरानी यादों में खो□ है, जब उन्होंने 'रहस्यपूर्ण इंग्लैंड' का वर्णन कयि है□ लंदन पर □ कटप्पिणी है 'यह शहर दुनयि की सांस्कृतकि वविधिताओं का ऐसा चलता-फरिता म्यूजयिम बन प□ता है कयि कीन नहीं होता कि आप कसिी देश की राजधानी में घूम रहे है या फरि दुनयि के वशिाल शहर में... वह पूरी दुनयि की राजधानी बन गया है□' यह लेख अपने अलग तेवर के ल□ याद कयि जा सक्ता है□ इस खंड में 'इस्लामी दुनयि और तेल' का सयिासी षड्यंत्र', इंग्लैड की बेरोजगार स□ें, इटली, मास्को की □ कजेल, बदलते रूस में साकार होता साम्यवाद, सोवयित यूनयिन का सातवां सूर्योदय□ रूस की चट्ठिी और यूनान: □ कइतहिास का भवष्यि, लेख है, जो उनकी वशि्व समझ को स्पष्ट करते है□

तीसरा खंड भारत की राजनीतिक परिस्थितियों से जु लेखन का है इसके अंतर्गत 'भारतीय बुद्धिजीवी' लेख में बालकृष्ण उन्हें बुद्धिजीवी, विद्वान और विचारक स्वीकार करते हैं, जो सतत चिंतन और मंथन द्वारा समाज का विश्लेषण करते हैं, न कि सिर्फ दूसरों के ज्ञान और अनुभव की गहरी जानकारी से विख्यात होना चाहते हैं इस क्रम में वे उच्च अंक प्राप्त करने वाले को बुद्धिजीवी नहीं मानते, न ही राज्याश्रित होने की आकांक्षा लि लोग बुद्धिजीवी हैं भारतीय संदर्भ में हिमालय की गुफाओं में रहने वाले 'साधु' बुद्धिजीवी नहीं हैं, क्योंकि समाज के लि उसका विशेष अर्थ नहीं है गांधी और कृष्ण को वे बुद्धिजीवी मानते थे, क्योंकि वे समाज में बदलाव को प्रेरित करते थे उनकी परिभाषा में जयप्रकाश नारायण और विनोबा नेहरू सरकार के गैर-सरकारी समर्थक मात्र हैं, जो आमूल सामाजिक बदलाव की मांग नहीं करते

'कांग्रेस पार्टी' पर महत्त्वपूर्ण विचार इस लेख में अभिव्यक्त है पहले चरण में सालाना जलसों के लि कांग्रेस जानी जाती थी, जिसमें देश की दुर्दशा पर आंसू बहाने के साथ कुछ मांगों का उल्लेख होता था और शासकीय जमात में हिस्सा हो, यह चाहना थी गांधी, नेहरू और पटेल पर टिप्पणी में बालकृष्ण यह मानते हैं कि नेहरू के लि जर्मन और इतालवी फासिज्म ब्रिटिश साम्राज्यवाद में अधिक खतरनाक था, जबकि गांधी और पटेल का आग्रह ब्रिटिश साम्राज्य को हटाने का था 1967 में बालकृष्ण की यह इच्छा थी कि विरोधी दलों को सीटों का बंटवारा कर कांग्रेस को ऐसी चुनौती देनी चाहि कि जिस बहुमत ने उसे पागल बना दिया, वह समाप्त हो जा और भूखी-नंगी जनता को मुक्ति मिले

बालकृष्ण बंगाल को बहुत अच्छी तरह समझते थे और उनकी बंगाल की राजनीति और समाज की पक उनके लेख 'वामपंथी बंगाल' से समझ में आती है इस खंड में नेहरू के नवरत्न, नेहरू के रहते क्या, भारत के राजनीतिक कार्यकर्ता, डॉ. राममनोहर लोहिया, कलकत्ता, काली चमी गोरा राज, सोशलिस्ट पार्टी और सत्याग्रह तथा भारत की विदेश नीति पर लेख हैं, जो उनके समाजवादी सोच और चुटीली भाषा के लि याद कि जा सकते हैं

'बिला, गोयनका और अंधी योजना' किताब का चौथा खंड है यह भारत की आर्थिक नीतियों के विश्लेषण से जुा है 'बिला रहस्य', बिला समूह का औद्योगिक साम्राज्य के विस्तार को समझने में सहायक है इस संदर्भ में बालकृष्ण की यह टीप क दृष्टि अवश्य देती है: 'अपने ब ते व्यापार और ऊंचे उठते उद्योग धंधों की तरक्की के लि भी बिला को अपनी महत्त्वाकांक्षा फलीभूत होती नजर आती थी, इसलि बिलाजी हर महीने, हर साल वायसराय, गवर्नरों, ब्रिटेन के इंडिया सेक्रेटरी, प्रधानमंत्री और अन्य प्रभावशाली ब्रिटिश राजनीतिकों से मिलते रहते थे... और यह भावना पैदा करने की कोशिश करते थे कि घनश्यामदास बिला अंगरेजी राज का सच्चा दोस्त है और अंगरेजी राज को भारत में महात्मा गांधी से क स्थायी और मजबूत समझौता करना जरूरी है... लेकिन बिला ने कभी विद्रोह का बिगुल नहीं बजाया' उद्योग घरानों और राजनीतिक संबंधों को स्पष्ट करने वाले अन्य लेख हैं 'बिला और मथाई' और 'करोपति गोयनका', 'अमेरिकी पूंजी और कार्बन के काले शेयर'

इसी खंड में भारत सरकार की औद्योगिक नीति पर लेख है, जो बालकृष्ण की आर्थिक-राजनीतिक व्यवस्था पर गंभीर टिप्पणी है जनवरी 1964 में लिखा 'कानी सरकार अंधी योजना' भारतीय नियोजन पर बालकृष्ण की तल्ख प्रतिक्रिया है, जिसका आरंभ वे योजना भवन को नेहरू युग की भद्दी निर्माण पद्धति कह सकते हैं और उन्हें आपत्ति है: 'योजना आयोग के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मंत्री और सदस्यों में कोई भी हरिजन, आदिवासी और शूद्र नहीं, सबके सब उस स्थापित उच्च वर्ग के लोग हैं, जिसको नीचे के लोगों की कोई चिंता नहीं'

उन्हें बेरोजगारी, बती महंगाई और वितरण प्रणाली पर चिंता है हिंदुस्तान के शिक्षित युवा यूरोप जा रहे, यह उन्हें अनुचित लगता है भारत में राष्ट्रीयकरण और समाजवाद पर उनका मत रहा है 'दोनों का मजाक ही नहीं कटु आलोचना का विषय बन ग हैं राजनीतिक प्रभुत्व का इस्तेमाल कर आलोचना-प्रत्यालोचना की बहस सिर्फ तानाशाही मुल्कों में बंद की जा सकती है, जनतंत्रों में नहीं' उनकी यह सलाह उचित लगती है कि जब तक आदमी को आदमी नहीं माना जाता, तब तक सारी चीजें हवा में ही तैरती रह जागी इस खंड के अन्य लेख हैं: बिला और मथाई, करोपति गोयनका, अमेरिकी पूंजी और कार्बन के काले शेयर, भारतीय चीनी व्यापार, मुद्रास्फीति और चोर-बाजारी

पुस्तकायन : समाजवाद की विरासत
Sunday, 29 June 2014 10:41

पुस्तक का अंतिम खंड ‘दस्तावेज’ है, जिसमें सत्ता से दूर रह कर आंदोलन पर ही नजर रही। राज्यसभा में बालकृष्ण गुप्त, दो अधलिखी कहानियां, खोज परिषद- □ क परिचय, सोशलिस्ट पार्टी पूर्णिया का चुनावी पर्चा और ‘दिनमान’ में श्रद्धांजलि सम्मिलित है।

हाशिए पर पड़ी दुनिया : बालकृष्ण गुप्त, सं.- सारंग उपाध्याय और अनुराग चतुर्वेदी; राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली; 600 रुपए।

फेसबुक पेज को लाइक करने के लिए क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लिए क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta

3 / 3